

**दुआ-60**

कर्ब व मुसीबत से तहफ़फ़ुज़ और ख़ता से मुआफ़ी के लिये हज़रत (अ0) की दुआ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ऐ मेरे माबूद! मेरे दुश्मनों के मेरी हालत पर दिल में खुश होने का मौक़ा न दे और मेरी वजह से मेरे किसी मुखलिस व दोस्त को रन्जीदा खातिर न कर। बारे इलाहा! अपनी नज़रे इनायात में से ऐसी नज़रे तवज्जो मेरे शामिले हाल फ़रमा जिससे तू इन मुसीबतों को मुझसे टाल दे जिनमें मुझे मुब्तिला किया है और उन एहसानात की तरफ़ मुझे पलटा दे जिनका मुझे खूगर बनाया है और मेरी दुआ और हर उस शख्स की दुआ को जो सिद्के नीयत से तुझे पुकारे कुबूल फ़रमा। क्योंकि मेरी क़वत कमज़ोर, चाराजोई की सूरत नापैद, और हालत सख़्त से सख़्त तर हो गई है और जो कुछ तेरे मखलूक़ात के पास है उससे मैं बिलकुल ना उम्मीद हूँ। अब तो तेरी पहली नेमतों के दोबारा हासिल होने में तेरी उम्मीद के अलावा कोई सूरत बाकी नहीं रही। ऐ मेरे माबूद! जिन रन्ज व आलाम में गिरफ़्तार हूँ उनके छुटकारा दिलाने पर तू ऐसा ही कादिर है जैसा उन चीज़ों पर कुदरत रखता है जिनमें मुझे मुब्तिला किया है। बेशक तेरे एहसानात की याद मेरा दिल बहलाती और तेरे इनआम व तफ़ज़्जुल की उम्मीद मेरी हिम्मत बन्धाती है। इसलिये के जबसे तूने मुझे पैदा किया है मैं तेरी नेमतों से महरूम नहीं रहा। और तू ही मेरे माबूद! मेरी पनाहगाह, मेरा मुलजा, मेरा मुहाफ़िज़ व पुशत पनाह, मेरे हाल पर शफ़ीक़ व मेहरबान और मेरे रिज़क का ज़िम्मादार है, जो मुसीबत मुझ पर वारिद हुई है वह तेरे फ़ैसलए क़ज़ा व क़द्र में और जो मेरी मौजूदा हालत है वह तेरे इल्म में गुजर चुकी थी। तो ऐ मेरे मालिम व सरदार! जिन चीज़ों को तेरे फ़ैसलए क़ज़ा व क़द्र ने मेरे हक़ में तै किया और लाज़िम व ज़रूरी करार दिया है उन चीज़ों में से मेरी इताअत और वह चीज़ जिससे मेरी बहबूदी और जिस हालत में हूँ उस से रिहाई वाबस्ता है करार दे। क्योंकि मैं इस मुसीबत के टालने में किसी से उम्मीद नहीं रखता और न इस सिलसिले में तेरे अलावा किसी पर भरोसा करता हूँ तो ऐ जलालत व बुजुर्गी के मालिक मेरे इस हुस्ने ज़न के मुताबिक़ साबित हो जो मुझे तेरे बारे में है और मेरी कमज़ोरी व बेचारगी पर रहम फ़रमा। मेरी बेचैनी को दूर कर। मेरी दुआ कुबूल फ़रमा। मेरी ख़ता व लग्ज़िश को माफ़ कर दे और मुझ पर और जो कुछ भी तुझसे दुआ मांगे अफ़ो व दरगुजर करके एहसान फ़रमा। ऐ मेरे मालिक! तूने मुझे दुआ का हुक्म दिया और कुबूलियते दुआ का ज़िम्मा लिया, और तेरा वादा ऐसा सच्चा है जिसमें ख़िलाफ़वर्जी व तबदीली की गुन्जाइश नहीं है। तू अपने नबी (स0) और अब्दे खास मोहम्मद (स0) और उनके अहले बैते अतहार (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा। और मेरी फ़रयाद को पहुंच क्योंकि तू उनका फ़रयादरस है जिनका कोई फ़रयादरस न हो। और उनके लिये पनाह है जिनके लिये कोई पनाह न हो। मैं ही वह मुजतर व लाचार हूँ जिसकी दुआ कुबूल करने और उसके दुख दर्द दूर करने का तूने

इलतेजाम किया है। लेहाजा मेरी दुआ को कुबूल फ़रमा, मेरे ग़म को दूर और मेरे रन्ज व अन्दोह को बरतरफ़ फ़रमा और मेरी हालत को पहली हालत से भी बेहतर हालत की तरफ़ पलटा दे और मुझे इस्तेहकाक के बक़द्र अज़्र न दे बल्कि अपनी उस रहमत के लेहाज़ से जज़ा दे जो तमाम चीज़ों पर छाई हुई है। ऐ जलालत व बुजुर्गी के मालिक तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद (स0) और आले मोहम्मद (स0) पर और मेरी दुआ को सुन और उसे कुबूल फ़रमा। ऐ ग़ालिब! ऐ साहेबे इक्तेदार।